नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

कितनी मौतों के बाद सुधरेगा सिस्टम !

लखनऊ के अलीगंज में सोमवार को हुआ अग्निकांड केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि व्यवस्था की सामूहिक विफलता का भयावह उदाहरण है. जिस इमारत में 15 युवाओं की जान गई, वहां आग से ज्यादा घातक साबित हुआ प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार का धुआं. यह हादसा एक बार फिर साबित करता है कि भारत में अक्सर लोग आग से नहीं, बल्कि नियमों की अनदेखी और सरकारी तंत्र की निष्क्रियता से मरते हैं.

रिहायशी भवन में चल रहे एनिमेशन ट्रेनिंग सेंटर में उस समय लगभग 30 छात्र मौजूद थे. अचानक आग लगी, धुआं पूरे भवन में फैल गया और कुछ ही मिनटों में वहां अफरा-तफरी मच गई. सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि भवन में आपातकालीन निकास (इमरजेंसी एग्जिट) तक नहीं था. जिन छात्रों को बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिला, वे जान बचाने के लिए बाथरूम में छिप गए. उन्हें लगा होगा कि शायद वहां कुछ देर सुरक्षित रह पाएंगे, लेकिन वही बाथरूम उनकी अंतिम शरणस्थली बन गया. धुएं से दम घुटने के कारण कई छात्रों की मौत हो गई. सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर कितनी मौतों के बाद हमारा सिस्टम सुधरेगा? इसी महीने की शुरुआत में दिल्ली के एक होटल में अग्निकांड के कारण जब, 21 लोगों की मौत हुई थी, तो देश भर की राज्य सरकारों ने दावा किया कि सभी शहरों में फायर ऑडिट्स की जा रही हैं. जाहिर है फायर ऑडिट के वो दावे फर्जी थे, अन्यथा लखनऊ का यह भीषण अग्निकांड नहीं होता. घटना के बाद सामने आया कि जिस इमारत का नक्शा आवासीय उपयोग के लिए स्वीकृत हुआ था, उसे वर्षों पहले व्यावसायिक उपयोग में बदल दिया गया था. यह परिवर्तन किसी एक दिन में नहीं हुआ होगा. वर्षों तक वहां संस्थान चलता रहा, छात्र आते रहे, फीस जमा होती रही और अधिकारी आंखें मूंदे बैठे रहे. आखिर क्यों ?

यहीं से इस त्रासदी का सबसे बड़ा और सबसे असहज प्रश्न सामने आता है. यदि भवन में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं हो रहा था, तो फायर विभाग क्या कर रहा था? यदि नक्शा आवासीय था, तो विकास प्राधिकरण ने कार्रवाई क्यों नहीं की? यदि भवन का उपयोग नियमों के विरुद्ध हो रहा था, तो स्थानीय प्रशासन को इसकी जानकारी क्यों नहीं थी ? और यदि जानकारी थी, तो कार्रवाई क्यों नहीं हुई ?

दुर्भाग्य से भारत में ऐसी घटनाओं का इतिहास लंबा है. दिल्ली का उपहार सिनेमा कांड, सूरत का कोचिंग सेंटर हादसा, राजकोट का गेमिंग जोन अग्निकांड, दिल्ली के होटल अग्निकांड और अब लखनऊ. हर बार जांच रिपोर्टें बनती हैं, हर बार जिम्मेदारों की सूची तैयार होती है और हर बार कुछ समय बाद सब कुछ भुला दिया जाता है. लेकिन जिन परिवारों ने अपने बच्चों को खोया है, उनके लिए यह हादसे कभी पुराने नहीं होते.

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एसआईटी गठित की है, चार अधिकारियों को निलंबित किया गया है और भवन मालिक समेत कई लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है. यह संतोष जनक है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है. क्योंकि समस्या केवल कुछ व्यक्तियों की नहीं, बल्कि उस पूरी व्यवस्था की है जिसमें नियमों का पालन कराने वाले तंत्र और नियम तोड़ने वालों के बीच अक्सर एक सुविधाजनक समझौता विकसित हो जाता है.

सवाल यह भी है कि क्या देश में फायर सेफ्टी को अब भी गंभीरता से लिया जा रहा है ? अधिकांश शहरों में कोचिंग संस्थान, हॉस्टल, छोटे अस्पताल, प्रशिक्षण केंद्र और व्यावसायिक भवन ऐसे हैं जहां आपातकालीन निकास, धुआं निकालने की व्यवस्था, अग्निशमन उपकरण और नियमित सुरक्षा ऑडिट जैसी बुनियादी चीजें तक मौजूद नहीं हैं. कागजों में सब कुछ सही दिखाई देता है, लेकिन जमीनी हकीकत अलग होती है.

लखनऊ की यह घटना दरअसल,पूरे देश के लिए चेतावनी है. यदि अब भी व्यापक स्तर पर सुरक्षा ऑडिट नहीं किया गया, यदि अवैध रूप से चल रहे संस्थानों पर कार्रवाई नहीं हुई, यदि अधिकारियों की व्यक्तिगत जवाबदेही तय नहीं हुई, तो अगली त्रासदी भी किसी शहर में इसी तरह सुर्खियां बनेगी. लखनऊ की आग बुझ चुकी है, लेकिन उससे उठे सवाल अब भी धधक रहे हैं. जब तक सुरक्षा नियमों को कागजी औपचारिकता मानने की मानसिकता खत्म नहीं होगी, जब तक जिम्मेदार अधिकारियों की वास्तविक जवाबदेही तय नहीं होगी और जब तक भ्रष्टाचार व लापरवाही पर कठोर दंड नहीं होगा, तब तक ऐसी त्रासदियां दोहराती रहेंगी.

रिफॉर्म के अंतर्गत बढ़ रही न्यायिक सुगमता

अर्जुन राम मेघवाल

> भारत के विधिक और राजनयिक नेतृत्व में ब्रिक्स देशों के न्यातयमंत्रियों की बैठक, 2026के दौरान मेडिएशन और आर्बिट्रेशन को विवाद समाधान के लिए अधिक प्रभावी और सुलभ माध्यम के रूप में स्थापित करने हेतु एक सामूहिक प्रतिबद्धता के रूप में गांधीनगर घोषणा पत्र को अपनाने में महत्ववपूर्ण भूमिका निभाई. ऐसे वैश्विक सहयोगों का उद्देश्य् न्याोयालयों में लंबित मामलों की संख्याद को कम करना, व्यापार और निवेश के लिए स्थिर एवं सुविचारित परिवेश को सृजित करने पर अत्यधिक बल देना तथा अनावश्य क मुकदमेबाजी से बचना है. ये सभी पहलें एक साझा दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि न्याय प्राप्त करने की इच्छाक रखने वाले प्रत्येनक व्यक्ति को एक जवाबदेह, सुलभ और सहयोगी शासन व्यवस्था प्राप्त हो. जैसे-जैसे हमारा देश माननीय प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित विकसित भारत 2047 की यात्रा पर आगे बढ़ रहा है, हम एक ऐसे भावी न्यायि प्रणाली के निर्माण के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं जो लचीली, नवोन्मेएषी,समावेशी और 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक आकांक्षाओं से प्रेरित हो.

न्याय सदा से ही मानव सभ्यता का एक अत्यगधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न स्तंभ रहा है. हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की समृद्ध परंपरा तथा उसके स्थायी प्रतीक सामूहिक रूप से उन संस्थागत व्यवस्था ओं को दर्शाते हैं जिन्होंने मानव सभ्ययता की विकास यात्रा को सही मार्ग पर आगे बढ़ाया, मार्गदर्शन किया और निरंतर आगे बढ़ने में सहायता की.

मानव सभ्यतता के अनवरत विकास के फलस्वंरूप ज्ञान-विज्ञान और तकनीक से समृद्ध आधुनिक समाज में एक-दूसरे से जुड़े व्यनक्तियों और समुदायों के आपसी संबंधों में भी विभिन्नक विचारों और मतों के कारण परिवर्तन आया है,तथापि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी उन्नति ने देश की सीमाओं से आगे जाकर विचारों के निर्बाध आदान-प्रदान को और अधिक सुगम बनाया है. अनादि काल से, एक विचार की दूसरे विचार पर श्रेष्ठता स्थावपित करने की होड़ न्यायशास्त्र के विकास की एक मजबूत नींव रही है. युगों से विचारों और मूल्यों के इस अंतर्संघर्ष के बीच न्यायिक संस्थानों ने सत्य, निष्पक्षता और विधि के शासन में लोगों के विश्वास को पुन:र्स्थापित करने की जिम्मेदारी निभाई है. इन्होंने एक सेतु का काम किया है जो प्रत्येक संबंधित पक्ष को, यहाँ तक कि उन लोगों को भी जो स्वयं को अलग-थलग महसूस करते हैं, न्याय और सामूहिक कल्याण की एक व्यापक प्रक्रिया से जुड़ाव, विश्वास और सहभागिता का अनुभव कराता है. इसी स्थायी संस्था गत प्रतिबद्धता के कारण एक ऐसी सशक्त व्यवस्था निर्मित होती है जो न केवल न्यीय तक पहुंच सुनिश्चित करती है बल्कि प्रत्येबक नागरिक के जीवन को सरल और सुगम बनाने के लिए अनिवार्य है.

वर्तमान संदर्भ में विकसित भारतीय न्यारयशास्त्रे ने स्वयं को आधुनिक चुनौतियों और उपलब्धन अवसरों के अनुरूप ढाल लिया है. हमारी संवैधानिक विरासत हमें स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्र निर्माताओं का स्वप्न साकार करते हुए एक समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में सतत मार्गदर्शन प्रदान करती है. संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय की त्रिवेणी अर्थात राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक न्याय तथा स्वातंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श संस्था,ओं और व्यआक्तियों दोनों के लिए एक नैतिक दिशासूचक के रूप में कार्य करते हैं. स्वतंत्र भारत को संविधान के रूप में एक आदर्श मार्गदर्शक प्राप्त हुआ जिसने हमारे राष्ट्रर की प्रगति की दिशा निर्धारित की.

देश की आजादी के बाद यद्यपि हमने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी, फिर भी गहरी जड़ें जमा चुकी औपनिवेशिक मानसिकता भारतीय चिंतन और मूल्यों के लिए एक बौद्धिक अवरोध बनी रही. लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति, उसके बाद भारत के नागरिकों के लिए बनाए गए दंडात्मक कानून तथा विभिन्नन नीतियों ने नियमों का एक जटिल जाल बुन दिया, जिसने देश की जनता की स्वतंत्रता को सीमित किया.

19वीं सदी की मानसिकता और 20वीं सदी के कानून 21वीं सदी की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते. हमें अपनी राष्ट्रीय उपलब्धियों पर अपार गर्व है. फिर भी, जब हम मोदी सरकार की बारह वर्षों की विकास यात्रा पर नजर डालते हैं तो शासन व्य वस्था में एक स्पष्ट और सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है जिसने नागरिकों के जीवन को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है. वर्ष 2014 को हमारे देश की लोकतांत्रिक यात्रा के एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में याद किया जाएगा. यह वह वर्ष था जबकि देश में युवाओं की विशाल आबादी को देश के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानने वाले तीव्र गति से विकसित हो रहे भारत की पूर्ण क्षमता को साकार करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेपों को और अधिक प्रभावी और सक्षम बनाया गया.

(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय मामलों के राज्य मंत्री हैं)

दिल्ली डायरी

राम मंदिर के दानपात्र से हेराफेरी पर बवाल

प्रवेश कुमार मिश्र

अयोध्या राम मंदिर के दानपात्र से हुई हेराफेरी से आस्था पर कुठाराघात हुआ है. जिस तरह से रोज नए खुलासे हो रहे हैं उससे राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ गई है. राज्य सरकार द्वारा गठित एसआईटी की जांच की आंच से कई दबे-छुपे राज का पर्दा जिस तरह से बेपर्दा हुआ है उससे साफ है कि आस्था की आड़ में वर्षों से सुनियोजित हेराफेरी को अंजाम दिया जा रहा था. चर्चा है कि इस खुलासे के बाद भाजपा व संघ के शीर्ष पदधारी खासे बेचैन हो गए हैं.

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव पर पड़ने वाले राजनीतिक असर के साथ-साथ धार्मिक आस्था के साथ हुए विश्वासघात के कारण ट्रस्ट के पदाधिकारियों पर उठ रहे सवालों के बाद राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर संघ काफी नाराज़ है. चर्चा है कि इस पूरे प्रकरण पर भाजपा द्वारा देश के सामने किस तरह का प्रतिक्रियावादी रूख अपनाया जाए , उसको लेकर सबसे ज्यादा मंथन चल रहा है. ऐसे सबकी निगाहें एसआईटी रिपोर्ट पर लगी हुई है.

टूट के भय से भयभीत डीएमके

जिस तरह से अचानक क्षेत्रीय दलों के अंदर टूट व बगावत आरंभ हुई है उसको लेकर सबसे ज्यादा डीएमके परेशान है. चर्चा है कि डीएमके रणनीतिकार अपने दल के लोकसभा सांसदों पर कड़ी नजर रखे हुए हैं. दिल्ली में उनसे मुलाकात करने वाले लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी ली जा रही है. इतना ही नहीं डीएमके अपने सांसदों को बेवजह दिल्ली जाने से बचने की हिदायत के साथ क्षेत्र में रहने के लिए दबाव बनाए हुए है. इसके अलावा डीएमके प्रमुख एम के स्टालिन अपने सांसदों से खुद बात करके भविष्य की रणनीति पर चर्चा कर रहे हैं.

असली शिवसेना के अस्तित्व को लेकर वाक युद्ध

शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट में बगावत के बाद अब एक नई बहस आरंभ हो गई है कि असली शिवसेना कौन है. गृहमंत्री अमित शाह के बयान के बाद शिंदे गुट अपने को असली शिवसेना बताकर बाला साहेब ठाकरे के मापदंड पर चलने वाले शिवसैनिक बता रहे हैं. जबकि उद्धव ठाकरे स्वयं को असली शिवसेना बताकर शिंदे गुट पर आरोप लगा रहे हैं. चर्चा है कि दिल्ली में बैठे शिंदे गुट के लोग महाराष्ट्र विधानसभा में मौजूद उद्धव गुट के विधायकों को भी तोड़ने की योजना बना रहे हैं. ऐसे में यह चर्चा तेज हो गई है कि क्या भाजपा की शह पर दूसरे क्षेत्रीय दलों के अंदर भी इसी तरह का प्रयोग होगा.

सत्ता व संगठन में जगह पाने को लेकर लॉबिंग

भाजपा संगठन के पुनर्गठन के साथ-साथ केन्द्रीय मंत्रिमंडल में भी फेरबदल होने वाला है ऐसे में दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में भाजपाई सांसदों व वरिष्ठ नेताओं द्वारा खुले तौर पर लाबिंग दिख रही है. भाजपा के राष्ट्रीय कार्यालय में वरिष्ठ नेताओं व युवा नेताओं की अपेक्षा से अधिक आवाजाही इस बात को प्रमाणित कर रही है. इतना ही नहीं कुछ सांसद भी अपनी वरियता को आधार बनाकर मंत्रिमंडल में स्थान पाने के लिए वरिष्ठ मंत्रियों के माध्यम से लाबिंग कर रहे हैं.

युवाओं को साधने में जुटे राहुल

राहुल गांधी इन दिनों देश की बड़ी युवा आबादी को साधने के लिए आक्रामक तरीके से राजनीति के केंद्र में आ रहे हैं. हाल ही में उन्होंने युवाओं के भविष्य, रोजगार और शिक्षा से जुड़े गंभीर मुद्दों पर सीधे जमीनी और डिजिटल तौर पर जुड़ने के लिए कई बड़े कदम उठाए हैं. इसी क्रम में उन्होंने छात्रों की गूंज नाम से राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत पिछले दिनों कोटा से की है. इस अभियान के माध्यम से कांग्रेस पार्टी सरकार की शिक्षा नीति से परेशान युवा बेरोजगारों की आवाज बनकर सरकार पर दबाव बनाने के प्रयास में जुटी हुई है.

क्षेत्रीय दलों के बाद बीजेपी के निशाने पर कांग्रेस

बीजेपी विरोधी प्लेटफार्म पर कांग्रेस के साथ शिवसेना (उद्धव), एनसीपी (शरद पवार) सपा, टीएमसी व डीएमके जैसी क्षेत्रीय पार्टियां रही हैं. इसे देखते हुए बीजेपी ने महाराष्ट्र में शिवसेना व एनसीपी को तोड़ा था और उसका प्रभाव इतना बढ़ गया कि विधानपरिषद चुनाव में बीजेपी ने जमकर बाजी मार ली.

प्रधानमंत्री मोदी अपने अधिकांश भाषणों में कांग्रेस को निशाना बनाते रहते हैं. हाल ही में उन्होंने बेंगलुरु में कहा कि अब कांग्रेस की पहचान एक परजीवी पार्टी की हो गई है. वह मौका मिलते ही अपने सहयोगी दलों से विश्वासघात करेगी. मोदी की यह टिप्पणी तमिलनाडु में कांग्रेस द्वारा डीएमके से दूरी बनाने और सरकार बनाने के लिए टीवीके से हाथ मिलाने को लेकर थी. बीजेपी नेता महसूस करते हैं कि राहुल गांधी कांग्रेस का आधार टिकाए रखने के लिए दक्षिण भारत पर निर्भर हैं. इसे देखते हुए बीजेपी ने 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए अपनी रणनीति बनाते हुए कर्नाटक व तेलंगाना में पार्टी को मजबूत करने के प्रयासों में अभी से तेजी ला दी है. बीजेपी की कोशिश है कि कांग्रेस की बुनियाद इस तरह कमजोर कर दी जाए कि वह राष्ट्रीय स्तर की पार्टी कहलाने लायक न रह जाए. दक्षिण भारत में कांग्रेस की मजबूत उपस्थिति बीजेपी का सिरदर्द बनी हुई है. बीजेपी नेता क्षेत्रीय पार्टियों को बताना चाहते हैं कि वह कांग्रेस पर भरोसा न करें. उसका साथ देने से उनको नुकसान ही होगा. कांग्रेस ने यूपी, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में क्षेत्रीय पार्टियों के सहयोग की वजह से ही 2024 के लोकसभा चुनाव में 99 सीटें हासिल की थीं. इस वजह से राहुल गांधी को नेता विपक्ष का अधिकृत पद मिल गया. बीजेपी विरोधी प्लेटफार्म पर कांग्रेस के साथ शिवसेना (उद्धव), एनसीपी (शरद पवार) सपा, टीएमसी व डीएमके जैसी क्षेत्रीय पार्टियां रही हैं. इसे देखते हुए बीजेपी ने महाराष्ट्र में शिवसेना व एनसीपी को तोड़ा था और उसका प्रभाव इतना बढ़ गया कि विधानपरिषद चुनाव में बीजेपी ने जमकर बाजी मार ली. बंगाल में टीएमसी और महाराष्ट्र में उद्धव सेना को तोड़ने में बीजेपी सफल रही. 543 सदस्यीय लोकसभा में बीजेपी नेतृत्व के एनडीए के 293 सदस्य हैं. अब टीएमसी से अलग हुए 20 सांसदों के गुट ने भी बीजेपी को समर्थन घोषित कर दिया है. बीजेपी का लक्ष्य है कि परिसीमन लागू करने के लिए संविधान संशोधन बिल पास कराया जाए. इसके लिए वह दो-तिहाई बहुमत जुटाने के लिए प्रयासरत है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

केवल पौधारोपण नहीं, जल संरचनाओं और वृक्षों का संरक्षण भी आवश्यक

ओ पी श्रीवास्तव

मानसून के आगमन के साथ हर वर्ष जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और वृक्षारोपण की चर्चा तेज हो जाती है। सरकारी विभाग, स्थानीय निकाय और विभिन्न संस्थाएँ लाखों पौधे लगाने के लक्ष्य घोषित करती हैं। किंतु सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इन अभियानों का वास्तविक प्रभाव धरातल पर कितना दिखाई देता है। यदि पुराने वृक्ष लगातार कटते रहें, प्राकृतिक पहाड़ियाँ समतल होती रही और तालाब, कुएँ तथा बावड़ियाँ उपेक्षित रहें, तो केवल पौधारोपण के आँकड़ों से पर्यावरण संतुलित नहीं हो सकता.

भारतीय संस्कृति ने हजारों वर्ष पहले ही प्रकृति को जीवन का आधार माना है। अथर्ववेद में पृथ्वी को माता मानते हुए कहा गया है- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात 'यह भूमि हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।' इसी प्रकार भारतीय परंपरा में वृक्ष, नदियाँ, पर्वत, तालाब और वन केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन और लोककल्याण के आधार माने गए हैं. ऋवैदिक और पुराणकालीन परंपराओं में वर्षा जल का संरक्षण, तालाबों का निर्माण, कुओं, बावड़ियों और सरोवरों की रक्षा को पुण्य कार्य माना गया। यही कारण था कि भारत के गाँवों और नगरों में जल संरक्षण की ऐसी व्यवस्थाएँ विकसित हुईं, जिनसे सदियों तक जल संकट नहीं उत्पन्न हुआ.

आज स्थिति इसके विपरीत दिखाई देती है। विकास परियोजनाओं के लिए बड़ी संख्या में परिपक्व वृक्षों की कटाई तथा प्राकृतिक पहाड़ियों को समतल किया जा रहा है। जबकि एक परिपक्व वृक्ष को विकसित होने में 30 से 50 वर्ष या उससे अधिक समय लगता है। उसकी भरपाई केवल एक पौधा लगाकर नहीं की जा सकती। पहले से मौजूद वृक्षों और प्राकृतिक संरचनाओं का संरक्षण ही पर्यावरण सुरक्षा का सबसे प्रभावी उपाय है.

प्रतिपूरक वनीकरण (केंपा) के लिए मार्च 2025 तक देश में लगभग 97,896 करोड़ रुपए की राशि प्राप्त हुई तथा 78,811 करोड़ रुपए से अधिक राज्यों को हस्तांतरित की जा चुकी है। इसके बावजूद आम नागरिकों को यह जानकारी सहज रूप से उपलब्ध नहीं है कि कितने वृक्ष काटे गए, उनके बदले कितने पौधे लगाए गए, वे कहाँ लगाए गए, उनमें से कितने आज भी जीवित हैं और हरित क्षेत्र में वास्तविक वृद्धि कितनी हुई. मानसून केवल पौधारोपण का मौसम नहीं, बल्कि वर्षा जल की प्रत्येक बूंद को सहेजने का भी अवसर है। तालाबों, कुओं, बावड़ियों, झीलों, नदियों के कैचमेंट क्षेत्र और प्राकृतिक जल निकासी मार्गों का संरक्षण किए बिना जल संकट का स्थायी समाधान संभव नहीं है.

नई कॉलोनियों, औद्योगिक क्षेत्रों और सरकारी भवनों में वर्षा जल संचयन की प्रभावी व्यवस्था अनिवार्य रूप से लागू होनी चाहिए. आज आवश्यकता केवल पौधे लगाने की नहीं, बल्कि 'बचाओ और बढ़ाओ' की नीति अपनाने की है। प्रत्येक विकास परियोजना में पहले यह सुनिश्चित किया जाए कि कितने वृक्ष बचाए जा सकते हैं, प्राकृतिक पहाड़ियों और जल स्रोतों को कैसे संरक्षित रखा जा सकता है, और जहाँ वृक्ष काटना अपरिहार्य हो, वहाँ उसी क्षेत्र में वैज्ञानिक ढंग से वृक्षारोपण कर कम से कम पाँच वर्षों तक उनकी देखरेख सुनिश्चित की जाए.

भारत की प्राचीन परंपरा हमें सिखाती है कि प्रकृति का संरक्षण ही समृद्धि का आधार है। यदि मानसून के इस मौसम में जल संरक्षण, वृक्ष संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संवर्धन को जनआंदोलन बनाया जाए, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित जल, स्वच्छ वायु और हरित पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सकेगा। विकास तभी सार्थक है, जब वह प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर आगे बढ़े.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12298 -डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. संबंधियों से रहित, जिसके सगे-संबंधी न रहे हों (सं.) 4. प्रस्थान, रवाना होना, कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति 6. धातुखंड पर आघात से उत्पन्न ध्वनि 7. प्रमाण, प्रमाण-पत्र, सबूत 8. एक आंख वाला 10. हार्दिक कामना 12. एक कुख्यात ठग 15. कान, अविवाहित अवस्था में उत्पन्न कुंती का पुत्र 16. वह कल्पित सीधी रेखा जो आरपार दोनों धुत्रों से मिलती हैं तथा जिस पर पृथ्वी घूमती है (सं.) 17. उम्मीद 18. कैंची या अन्य किसी औजार से काटना 20. पहाड़ों की चट्टानों से निकलने वाली एक पौष्टिक काली औषध 22. सादापन, सरलता, निष्कपटता 24. पहाड़ के नीचे का वह स्थान जहां तरी रहती है 25. लीन, लिप्त

ऊपर से नीचे

1. परेशान, तंग, हैरान 2. वंध्या स्त्री, जिसे संतान न उत्पन्न हो 3. धन हरण करने वाला, चोर 4. झुका हुआ, नम्र 5. एक चर्म रोग 7. सहज, सुगम, सीधा-सादा 9. वह स्थान जहां नाटक होता है 11. सकुशल, रक्षित, कायम 13. हिंदुओं के चार विभाग- ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, रंग, अक्षर 14. कमरा, कोठरी 16. अपमान, निरादर 17. आसक्त, प्रेमी 18. बूंद 19. शोरबा 21. विजय 23. वह जो गाया जाए, गाना

Solution 12297

दे	व	दू	त			आ	स
ह	र			हि	रा	स	त
पा		म	हि	मा		मा	ह
त	ला	श		ल	ल	न	
	स	हू	लि	य	त		कि
नौ	क	र			खो	ख	ला
ब			आ	म	र	स	
त	मा	श	बी	न		रा	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र के सहयोग से आर्थिक कष्ट दूर होगा, सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के मध्य में साहसपूर्ण कार्यों में यश प्राप्त होगा, जल्दबाजी के कार्यों से बचें, वर्ष के अन्त में शिक्षा के क्षेत्र में व्यवधान आयेगा, धार्मिक कार्यों में व्यय और रूचि रहेगी, परिश्रम और भागदौड़ सफल होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को साहसपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी, जल्दबाजी में लिये गये निर्णयों से शंका प्राप्त होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को लेखनादि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में प्रगढ़ता आयेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परेशानी आ सकती है, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, परोपकारी, मिलनसार होगा, इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी, किसी विशेष विद्या का ज्ञाता होगा. इनके मित्रों की संख्या अधिक होगी, सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यों में इनकी रूचि रहेगी. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

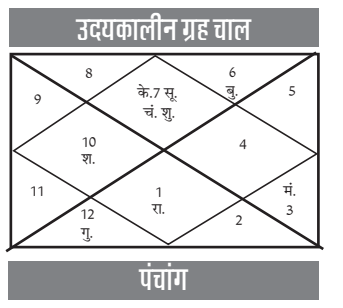

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल दशमीं बुधवासरे रात 8/9, चित्रा नक्षत्रे शाम 4/41, परिघ योगे दिन 1/40, तैतिल करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल दशमीं को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, गेहूँ, चना, नमक, रूई, चांदी के भाव में मंदी होगी, सोना-चांदी में विशेष मंदी होगी. जीरा, धनियां के भाव पूर्ववत रहेंगे. आज 11 बजकर 10 मिनिट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 2131 है.

मेष- धीमी गति के बावजूद कार्यक्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी, पारिवारिक विवादों में विजय प्राप्त होगी. कार्यों के प्रति लगन और रूचि रहेगी.

वृषभ- भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, आकस्मिक धन लाभ से समस्या का समाधान होगा. पारिवारिक आकांक्षाओं की पूर्ति होगी. आमोद प्रमोद पर खर्च होगा.

मिथुन- नई जिम्मेदारी आने से आप परेशान हो सकते हैं, उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु बाधाएं दूर होंगी, साहसिक प्रयास सार्थक होगा.

कर्क- युवाओं को बेहतर सफलता मिलेगी, कार्यक्षेत्र में विपरीत हालात पैदा होंगे, संतान पक्ष के कारण भावनात्मक कष्ट होगा, रचनात्मक कार्यों में रूचि रहेगी.

सिंह- किसी के सहयोग से अटका कार्य आसानी से बन जायेगा, भूमि भवन के कार्यों में अनुकूलता रहेगी, किसी सदस्य की अस्वस्थ्यता के कारण चिन्ता हो सकती है.

कन्या- नाराज चल रहे लोगों को मनाना पडेगा, दिखावेके कारण खर्च में वृद्धि होगी, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें.

तुला- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नता दायक रहेंगे, जोखिम के कार्यो से दूर रहें, नवीन वस्त्राभूषण उपहार आदि की प्राप्ति होगी. संपत्ति विवाद को टालना हितकर रहेगा.

वृश्चिक- सार्वजनिक जीवन में मान सम्मान मिलेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, भ्रमण मनोरंजन में खर्च होगा. धार्मिक यात्रा का योग है.

धनु- मित्रों से कहासुनी का मलाल रहेगा, अटकी योजना फिर शुरू हो सकती है, संपत्ति के कार्यो पर व्यय होगा. योजनाओं की रूपरेखा बनेगी.

मकर- दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, शादी विवाह की चर्चाओं में सफलता मिलेगी, कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा, निजी प्रयासों में सफलता मिलेगी.

कुम्भ- मेहमान के आने से कार्यक्रम बदल सकता है, निजी कार्यो पर ध्यान दें, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी, दायित्वों की पूर्ति होगी.

मीन- काम को टालने का प्रयास न करें, स्वत: के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि रहेगी, वरिष्ठजनों के सहयोग से कार्य बनेगा.

SUDOKU 7430

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7429

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1